Dr Vinod Baitha
Deptt. of Economics
Marwari college
Darbhanga

Economics D.I Hons

LECTURE 10

उत्पत्ति ह्रास नियम

LAW OF DIMINISHING RETURNS

अर्थशास्त्र में उत्पादन के पाँच साधनों के द्वारा किसी उत्पादन का कार्य का सम्पादन किया जाता है उत्पादन के पाँचों साधनों में भूमि, श्रम, पूँजी, संगठन एवं साहस का अपना विशेष महत्व है। उत्पत्ति के नियम, उत्पादन के साधन तथा उत्पादन के बीच क्रियात्मक संबंध की व्याख्या करते हैं। उत्पत्ति के नियम यह बताते हैं कि जब उत्पादन में वृद्धि के लिए उत्पादन के साधनों की मात्रा एवं अनुपात में वृद्धि की जाती है तब उत्पादन किस अनुपात में बढ़ता है।

उत्पत्ति ह्रास नियम इस बात को स्पष्ट करता है कि उत्पादन तकनीक में सुधार नहीं हो तो उत्पादन साधनों श्रम एवं पूँजी की मात्रा बढ़ाने पर भूमि से साधनों की तुलना में प्राप्त होने वाले उत्पादन का अनुपात कम होता है। उत्पादन में वृद्धि के अनुपात से कम होता है, उत्पत्ति ह्रास नियम का आधुनिक नाम परिवर्तनशील अनुपातों का नियम है। प्राचीन अर्थशास्त्री यह मानते थे कि उत्पत्ति ह्रास नियम केवल कृषि में ही लागू होता है। लेकिन आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार यह उत्पादन के सभी क्षेत्रों में लागू होता है। उत्पादन कम से कम एक साधन को स्थिर रखा जाय तथा अन्य साधनों की मात्रा में परिवर्तन किया जाय। इस तरह यह एक सार्वभौम नियम है।

इस नियम की व्याख्या सर्वप्रथम प्रकृतिक अर्थशास्त्री टरगो ने किया था। इसके बाद रिकार्डो, स्मिथ, माल्थस, ने व्याख्या की है मार्शल के अनुसार भूमि के निश्चित आकार के प्लोट पर श्रम तथा पूँजी की मात्रा में लगातार वृद्धि की जाय तो उत्पादन में वृद्धि उस अनुपात में नहीं होती जिस अनुपात में साधन बढ़ाया जाता है, जिसे हम उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होना कहते हैं। मार्शल ने इस नियम की व्याख्या कृषि के संबंध में की है " यदि कृषि कला में कोई सुधार न होतो भूमि पर उपयोग की जानेवाली पूँजी और श्रम की मात्रा में वृद्धि करने से कुल उपज में सामान्यतः अनुपात से कम वृद्धि होती है।" यदि साधनों में वृद्धि के अनुपात की तुलना में उत्पादन में वृद्धि का अनुपात कम हो तो यह कहा जाता है कि उत्पत्ति ह्रास नियम क्रियाशील हो रहा है। अर्थशास्त्री श्रीमती जॉन रॉबिंसन के अनुसार " उत्पत्ति ह्रास नियम जैसे समानतया कहा जाता है यह बताता है कि किसी एक उत्पादन साधन की मात्रा निश्चित रखने पर एक बिन्दु के पश्चात अन्य साधनों की प्रत्येक अगली वृद्धि से उत्पत्ति में घटती हुई वृद्धि होगी।" इस प्रकार जॉन रॉबिंसन एक साधन को स्थिर रख कर अन्य साधनों को परिवर्तनशील मानती है। अर्थशास्त्री स्टिगलर के शब्दों में " उत्पत्ति के अन्य साधनों की इकाईयों को स्थिर रख कर किसी एक साधनों की इकाईयों की मात्रा में वृद्धि की जाय तो एक सीमा के पश्चात उस इकाई से प्राप्त होने वाली उपज घटने

Scanned by CamScanner

लगेगी" साधन अनुपात में लगातार वृद्धि करने से सीमान्त उत्पादन में क्रमशः कमी दर्ज होने लगती है।

इस तरह से विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने अपने-अपने ढंग से उत्पत्ति ह्रास नियम की परिभाषा दी है उत्पत्ति ह्रास नियम स्पष्ट करने के लिए एक तालिका का उदाहरण दिया जा सकता है।

श्रम एवं पूँजी की इकाईयाँ	कुल उत्पादन क्विंटल में	सीमान्त उत्पादन क्विंटल में
1	10	10
2	18	8
3	24	6
4	28	4
5	30	2

तालिका से स्पष्ट है कि जब साधन की मात्रा बढ़ाकर दो गुनी तीन गुनी या चौगुनी की जाती है तब उत्पादन में वृद्धि उस अनुपात में नहीं होती है। कुल उत्पादन में वृद्धि साधन अनुपात में वृद्धि की अपेक्षा कम हो रही है। तथा सीमान्त उत्पादन लगातार घटता जा रहा है। इससे स्पष्ट है कि उत्पादन में उत्पत्ति ह्रास नियम लागु हो रही है।

इस नियम की व्याख्या रेखा चित्र द्वारा भी की जा सकती है रेखा चित्र द्वारा उत्पत्ति ह्रास नियम को भी दिखाया जा सकता है।

इस रेखा चित्र में OX पर साधन की इकाईयों को तथा OY पर सीमान्त उपज को दिखाया गया है। QD रेखा उत्पत्ति ह्रास की रेखा है जो उत्पादन में होने वाले ह्रास को प्रदर्शित करता है इस रेखा से स्पष्ट है कि उत्पादन में उत्पत्ति ह्रास नियम लागु हो रहा है।

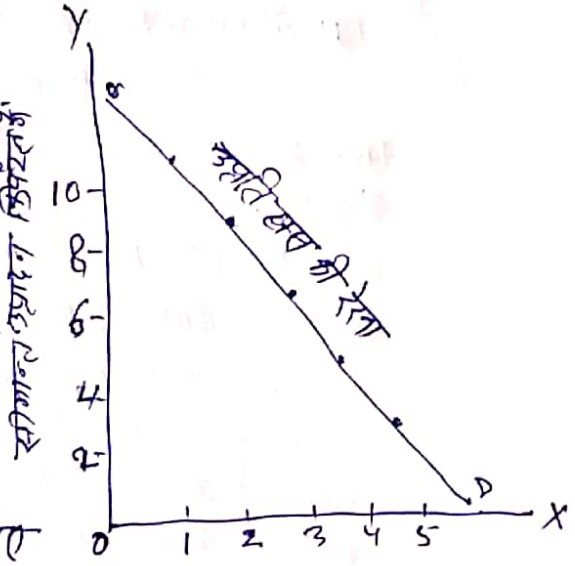

कुछ अर्थशास्त्रियों की परिभाषाओं का अध्ययन करके उत्पत्ति ह्रास नियम के कुछ मान्यताएँ या सीमाएँ हैं जो निम्नलिखित हैं।

1. सामान्यतया In general — इस शब्द के द्वारा इस सिद्धान्त की मान्यता को बताते हैं यह नियम तभी लागु होते हैं जब सामान्यतया साधनों श्रम एवं पूँजी का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में न किया जाए। जब तक साधनों का पर्याप्त मात्रा में प्रयोग न किया जाए तब तक सीमान्त उत्पादन में कमी के बदले वृद्धि हो सकती है। तथा यह नियम लागु नहीं हो सकता है। इस लिए जब साधनों का पर्याप्त मात्रा में परियोग किया जाय तब यह नियम अंततः लागु होता ही है।

2. कृषि कला में सुधार — उत्पत्ति ह्रास नियम की मान्यता है कि कृषि कला या उत्पादन के तरीकों में सुधार नहीं होना चाहिए। तब ही यह नियम लागु होगा। यदि

यदि उत्पादन की तकनीकि में सुधार हो जाए तो इस नियम की क्रियाशीलता को कुछ समय के लिए रोका जा सकता है। इस लिए कृषि कला एवं तकनीकि में सुधार नहीं होना चाहिए। तभी यह नियम लागु होगा। लेकिन कोकार तकनीक का प्रयोग या उत्पादन के तरीकों में सुधार इस नियम के लागु होने से कुछ समय तक रोक सकता है अंतत: उत्पादन के क्षेत्र में यह नियम एक स्थिति के बाद अवश्य लागु होता है।

इस प्रकार उत्पत्ति ह्रास नियम लागु होने कारण है जिससे उत्पादन में उत्पत्ति ह्रास नियम क्रियाशील रहता है और उत्पादन साधनों की अपेक्षा कम होता है जिसका कारण निम्नलिखित हैं।

1. साधनों की निश्चित पूर्ति — उत्पादन के विभिन्न साधन हैं जिनमे से कुछ की पूर्ति निश्चित होती है। जिसके कारण उत्पत्ति ह्रास नियम लागु होता है। कुछ साधनों की पूर्ति निश्चित होती है ऐसे में जब दुसरे साधनों की मात्रा बढ़ाई स्वाभाव भूमि की पूर्ति निश्चित होती है ऐसे में जब दुसरे साधनों की मात्रा बढ़ाई जाती है तब उसकी कार्यक्षमता में ह्रास आता है तथा सीमान्त उत्पादन घटने लगता है। जब भूमि की निश्चित मात्रा पर श्रम एवं पूँजी की मात्रा में वृद्धि की जाती है, तब उत्पत्ति ह्रास नियम लागु होने लगता है।

2. साधनों का आदर्श प्रयोग का अभाव — उत्पादन के साधनों के गलत प्रयोग या आदर्श संयोग के अभाव में उत्पत्ति ह्रास नियम लागु होता है। एक स्थिति के बाद जब श्रम एवं पूँजी की स्थिति में वृद्धि की जाती है तो आदर्श संयोग समाप्त हो जाता है। कुछ साधनों की अत्यधिक मात्रा का प्रयोग होने लगता है। जिसके कारण उत्पत्ति ह्रास नियम लागु होने लगता है।

3. साधनों के बीच अपूर्णस्थानापन्न का होना — एक साधन दुसरे साधन के पूर्ण स्थानापन्न नहीं होते, एक साधन का प्रयोग दुसरे साधन के बदले एक सीमा तक ही किया जा सकता है इसलिए जब एक साधन के बदले दुसरे साधन की अधिक मात्रा का प्रयोग किया जाता है तब साधनों की कुशलता घटती है। तथा उत्पत्ति ह्रास नियम लागु होने लगता है। यदि ऐसा नहीं होता तो भूमि के एक छोटे से टुकड़े पर या फूल के गमले में श्रम एवं पूँजी की मात्रा बढ़ाकर पूरे विश्व के लिए खाद्यान्न का उत्पादन किया जा सकता था।

4. कृषि तथा प्राथमिक क्षेत्र में प्रकृति की प्रधानता — कृषि तथा प्राथमिक क्षेत्र में प्रकृति की प्रधानता होती है इस क्षेत्र में मनुष्य अपने परिश्रम से एक सीमा तक ही उत्पादन बढ़ा सकता है। इसलिए एक सीमा के बाद जब भूमि पर श्रम एवं पूँजी की मात्रा बढ़ाई जाती है तब उत्पादन में वृद्धि नहीं होती, कृषि तथा प्राथमिक क्षेत्रों, खनिज उद्योग, मत्स्य पालन उद्योग, भवन निर्माण उद्योग इत्यादि में बाढ़, वर्षा की अनिश्चितता, सुखा, आँधी तुफान इत्यादि का काफी प्रभाव पड़ता है। इसलिए उत्पादन बढ़ाने में काफी कठिनाई होता है तथा उत्पत्ति ह्रास नियम क्रियाशील होने लगता है।

5. उत्पादन की अमितव्ययिताएँ — उत्पत्ति ह्रास नियम में एक स्थिति के बाद जब उत्पादन का पैमाना बढ़ता है तब व्यवस्था संबंधि कठिनाईयाँ उत्पन्न होने लगती हैं। बड़े पैमाने पर उत्पादन का लाभ में बदल जाते हैं तथा उत्पत्ति ह्रास नियम लागु होने लगते हैं।

Scanned by CamScanner

उत्पत्ति ह्रास नियम के लागू होने के अनेक कारणों के फलस्वरूप भी आधुनिक समाज में इसका महत्व है, जो निम्नलिखित है।

1. यह नियम सर्वव्यापी है — उत्पत्ति ह्रास नियम सर्वव्यापी है क्योंकि मानवीय क्रियाओं में प्रत्येक उद्योग में ह्रासमान प्रतिफल की प्रवृत्ति सदा विद्यमान रहती है एक विद्यार्थी का भी यह अनुभव रहता है कि दो-तीन घंटे पढ़ने के पश्चात उसके अध्ययन की गति मंद हो जाती है और वह पहले की अपेक्षा कम पढ़ सकता है। दो और पढ़ने के बाद विद्यार्थी थकावट का अनुभव करने लगता है और अध्ययन में मन लगाने में कठिनाई होने लगती है यह भी उत्पत्ति ह्रास नियम का ही एक रूप है इसका कारण विद्यार्थी का मानसिक शक्ति का सीमित होना है। मिकसीड के शब्दों में "यह नियम उतना ही सर्वव्यापी है जितना स्वयं जीवन का नियम है"।

2. माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त का आधार — माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त जिसके अनुसार खाद्य सामग्री की अपेक्षा जनसंख्या अधिक तेजी से बढ़ती है। यह उत्पत्ति ह्रास नियम पर आधारित है।

3. रिकार्डो का लगान सिद्धान्त — रिकार्डो का लगान सिद्धान्त भी इस नियम पर आधारित है। विस्तृत खेती में जो बढ़त अधिसीमान्त भूमियों को सीमान्त भूमि के ऊपर प्राप्त होता है उसे रिकार्डो ने लगान कहा है, किन्तु सीमान्त भूमि को प्रयोग में लाने के कारण उत्पत्ति ह्रास नियम क्रियाशील ही है

4. जनसंख्या का आवास-प्रवास — यदि ह्रासमान प्रतिफल नियम कृषि और उद्योग में लागू न होता है तो एक ही खेत से और एक ही कारखाने से विश्व के लिए तथा अन्य वस्तुओं का उत्पाद कर लिया जाता और ऐसा होने पर जनसंख्या के एक स्थान या देश से दूसरे स्थान या देश को प्रवास करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

5. सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त का आधार — सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त भी इस नियम पर आधारित है। ह्रासमान प्रतिफल नियम की सहायता से ही उत्पादन के विभिन्न साधनों को कम या अधिक पुरस्कार निर्धारित किया जाता है।

6. जीवन स्तर पर प्रभाव — किसी देश के लोगों का जीवन स्तर भी क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम द्वारा प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए यदि किसी देश की जनसंख्या अन्य साधनों जैसे भूमि और पूँजी की अपेक्षा तीव्रगति से बढ़ती है तो वह उत्पत्ति ह्रास नियम क्रियाशील होगा और लोगों का जीवन स्तर नीचा हो जाएगा।

7. आविष्कारों के लिए प्रेरणा — बहुत से आविष्कार, खोज, अनुसंधान, इस नियम की क्रियाशीलता को स्थगित करने के लिए ही किए गए हैं और आज भी मनुष्य नयी खोज के लिए निरंतर प्रयत्नशील है।

इस प्रकार आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने सिद्ध कर दिया है कि उत्पत्ति ह्रास नियम केवल कृषि या उससे संबंधित कार्यों में लागू नहीं होता बल्कि उद्योग तथा उत्पादन के अन्य क्षेत्रों में भी लागू होता है यह नियम कृषि तथा प्राथमिक उद्योग जैसे मछली उद्योग, खनिज उद्योग भवन निर्माण उद्योग, लकड़ी काटने का उद्योग इत्यादि में शीघ्र ही लागू होता है लेकिन लेकिन अन्य क्षेत्रों में भी यह नियम लागू होता है। अतः उत्पत्ति ह्रास नियम उत्पत्ति का एक सार्वभौम तथा मौलिक नियम कहा जाता है जो उत्पादन कार्य में अवश्य ही लागू होता है।